विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 8 | अंक: 31 | सितंबर, 2015

10वां विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

10-12 सितंबर, 2015 तक विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मध्य प्रदेश राज्य सरकार के सहयोग से भोपाल, भारत में 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। तीन दशक बाद भारत में लौटे हिंदी के महाकुम्भ के आयोजन ने हिंदी की ऊर्जा का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। सुधी पाठकों के लिए सम्मेलन की अनेक झलकियाँ व विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत हैं।

पृ. 2-3-4

विश्व हिंदी सम्मेलन में 40 हिंदी विद्वानों को उनकी हिंदी सेवा के लिए 'विश्व हिंदी सम्मान' प्रदान किया गया। सम्मान प्राप्त करने वाले विद्वानों का परिचय पृ 14-15-16 पर प्रस्तुत है।

मॉरीशस में हिंदी शिक्षण तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी-कार्यशाला

27-29 जुलाई, 2015 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा मॉरीशस सरकार तथा भारत सरकार के तत्वावधान में देश की गैर-सरकारी माध्यमिक पाठशालाओं के 100 से अधिक हिंदी शिक्षकों के लिए 'हिंदी शिक्षण तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी-कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

पृ. 8-9

हिंदी दिवस 2015 : विश्व भर में

सितंबर का महीना परम्परानुसार हिंदी दिवस को भी समर्पित रहा। भारत के साथ-साथ अनेक देशों में हिंदी दिवस अत्यंत सम्मानपूर्वक मनाया गया। भारत और विदेश में हिंदी दिवस के आयोजन की कुछ चयनित रिपोर्ट विश्व हिंदी समाचार के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही हैं।

पृ. 10-11

आगे पढ़ें :

- श्री नरेंद्र मोदी ने किया पहले उज़्बेक-हिंदी शब्दकोश का लोकार्पण — पृ. 12
- सिऐटल में पाँचवां झिलमिल कवि सम्मेलन — पृ. 13
- 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ' का लोकार्पण — पृ. 14
- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा सम्मान समारोह — पृ. 15
- डॉ. बालशौरि रेड्डी व श्री आस्थानन्द सदासिंह को श्रद्धांजलि — पृ. 16

ISSN 1694-2485

10वां विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, भारत

उद्घाटन समारोह में सभागार को संबोधित करते हुए भारत के प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी

10-12 सितंबर, 2015 तक विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मध्य प्रदेश राज्य सरकार के सहयोग से भोपाल, भारत में 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। 10वाँ सम्मेलन भारत में आयोजित करने का निर्णय सितंबर 2012 में जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मंतव्यों में लिया गया था। तीन दशक बाद भारत में लौटे हिंदी के महाकुम्भ के आयोजन ने हिंदी की ऊर्जा का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। उद्घाटन समारोह से लेकर विचार सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रदर्शनियाँ सभी हिंदी के वैश्विक महत्व को उभारने में अति सफ़ल रहे। विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से इस विशाल आयोजन की सफ़लता की बधाई के साथ विश्व हिंदी समाचार के पाठकों के लिए सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत है।

उद्घाटन समारोह

सम्मेलन के लिए भोपल के लाल परेड मैदान में विशेष रूप से 'माखनलाल चतुर्वेदी नगर' का निर्माण किया गया था। इस विशालकाय पंडाल के रामधारी सिंह दिनकर सभागार में ही 10 सितंबर की प्रात: देश-विदेश से आए लगभग पाँच हज़ार प्रतिभागियों और अतिथियों की उपस्थिति में मध्य प्रदेश मुख्य मंत्री द्वारा स्वागत तथा विदेश मंत्री द्वारा सम्मेलन की प्रस्तावना के उपरांत भारत के प्रधान मंत्री द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन का अद्घाटन किया गया। अवसर पर विशेष रूप से भारत की विदेश मंत्री, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज, मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री, माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान, अनेक राज्यों के राज्यपाल, केंद्र मंत्रियों, राज्य मंत्रियों तथा मॉरीशस की शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन के साथ अनेक गणमान्य मंचासीन थे।

श्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि ***दुनिया में हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। हिंदी की समृद्धि के लिए इसे अन्य भाषाओं के साथ न केवल जोड़ने की प्रक्रिया चलनी चाहिए बल्कि इसे निरन्तर जारी भी रखना चाहिए। हिंदी और अन्य भाषाओं के सम्मेलन करने पर भाषा शास्त्री विचार करें।***

श्री मोदी ने विश्व के 39 देशों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए हिंदी को चैतन्य भाषा बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की और मॉरीशस की सरकार, जनता और साहित्यकारों के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया। इस अवसर पर उन्होंने समारोह के शुभंकर पर विशेष डाक टिकट के साथ विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मारिका, 'गगनांचल' पत्रिका के विशेषांक और 'प्रवासी साहित्य जोहान्सबर्ग से आगे' का लोकार्पण भी किया।

उद्घाटन समारोह में अपने संबोधन में विदेश मंत्री माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि ***10वां विश्व हिंदी सम्मेलन ऐतिहासिक साबित होगा। अभी तक जितने भी विश्व हिंदी सम्मेलन हुए हैं वे साहित्य पर केंद्रित थे। यह पहला ऐसा सम्मेलन है जो भाषा को समर्पित है।*** उन्होंने ***बताया कि पिछले नौ हिंदी सम्मेलन साहित्य को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किए गए, जबकि यह सम्मेलन हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया है।***

भारत के प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन के साथ अनेक महानुभाव

उनके शब्दों में ***यह सम्मेलन परिणाममूलक रहेगा। और इसी उद्देश्य से सम्मेलन में ऐसे विषयों का चयन किया गया है जिसमें वर्तमान समय में हिंदी भाषा के विस्तार की संभावनाएँ हैं। संचार एवं सूचना, प्रशासन, सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान और विदेश नीति ऐसे ही कुछ विषय हैं।***

इससे पूर्व अपने स्वागत वक्तव्य में मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधान मंत्री और अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री मोदी का सम्मेलन के आयोजन की सहमती देने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि ***जिस गुजरात से महात्मा गांधी ने हिंदी का जयघोष किया था उसी गुजरात से आज श्री मोदी जी हिंदी का मान बढ़ा रहे हैं।*** उन्होंने कहा कि ***हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की घोषणा भी गुजरात से हुई थी। श्री मोदी हिंदी बोलनेवाले प्रधान मंत्री हैं और उन्होंने देश-विदेश में हिंदी का मान बढ़ाया है। यहाँ तक कि संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा में भी हिंदी को सम्मान दिलाया है।***

सम्मेलन का शुभारंभ श्री महेश श्रीवास्तव द्वारा रचित हिंदी प्रशस्ति गान से किया गया जिसे संगीतबद्ध किया है युवा संगीतकार उमेश तरकस्वार ने व स्वर दिया है प्रख्यात गायिका सुहासिनी जोशी ने। मंचासीन मुख्य व विशेष अतिथियों का अंगवस्त्र भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के अंत में विदेश राज्य मंत्री माननीय जनरल वी. के. सिंह ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर राज्यपाल महामहिम श्री रामनरेश यादव, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री केसरी नाथ त्रिपाठी, गोवा की राज्यपाल महामहिम श्रीमती मृदुला सिन्हा, भारत के केंद्रीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री माननीय श्री रविशंकर प्रसाद, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री माननीय डॉ. हर्षवर्धन, झारखण्ड के मुख्य मंत्री माननीय श्री रघुवर दास, गृह राज्य मंत्री माननीय डॉ. किरेन रिजिजू, विदेश सचिव श्री अनिल वाधवा, प्रबंधन समिति के उपाध्यक्ष सांसद श्री अनिल माधव दवे सहित विभिन्न देश से आए हिंदी विद्वान और राज्य मंत्री-मंडल के सदस्य उपस्थित थे।

सम्मेलन

10वें विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय '**हिंदी जगत : विस्तार एवं संभावनाएँ**' रखा गया था। मुख्य उद्देश्य समकालीन वैश्विक परिस्थिति में हिंदी को मानव एवं राष्ट्र सेवा का साधन बनाना तथा हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाकर विश्व भाषा के रूप में स्थापना करना रहा।

सम्मेलन सत्र

सम्मेलन में समकालीन मुद्दों और विषयों पर विचार-विमर्श किया गया तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रशासन और विदेश नीति, विधि, मीडिया आदि के क्षेत्रों में हिंदी के सामान्य प्रयोग और विस्तार से संबंधित तौर तरीकों पर भी गंभीर चर्चा हुई।

सम्मेलन में प्रथम दो दिनों के अंतर्गत ***गिरमिटिया देशों में हिंदी, विदेशों में हिंदी शिक्षण : समस्याएँ और समाधान, विदेशियों के लिए भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा, अन्य भाषा-भाषी राज्यों में हिंदी, विदेश नीति में हिंदी, प्रशासन में हिंदी, विज्ञान क्षेत्र में हिंदी, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी, विधि एवं न्याय क्षेत्र में हिंदी और भारतीय भाषाएँ, बाल साहित्य में हिंदी, हिंदी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता, देश और विदेश में प्रकाशन : समस्याएँ एवं समाधान*** शीर्षक से बारह निर्धारित विषयों पर मुख्य सभागार से अलग चार सभागारों में समानांतर सत्र चले। द्वितीय तथा तृतीय दिवस को इन विषयों पर आयोजित सत्रों की रिपोर्ट और अनुशंसाएँ प्रस्तुत की गईं तथा उनका अनुमोदन किया गया। इन सत्रों में पारित मंतव्यों को सम्मेलन के समापन समारोह में प्रत्येक सत्र के प्रतिवेदक द्वारा प्रस्तुत किया गया।

सम्मेलन स्थल पर कई विशेष प्रदर्शनियाँ लगाई गईं। इनमें अनेक वैश्विक कंपनियों जैसे गूगल, एप्पल, माइक्रोसॉफ़्ट द्वारा हिंदी से संबंधित नवीनतम उत्पाद प्रदर्शित किए गए। इनके अतिरिक्त वेबदुनिया, सीडैक आदि की परियोजनाएँ और विश्वविद्यालयों तथा हिंदी क्षेत्र में कार्यरत अन्य संस्थाओं को भी मंच प्रदान किया गया था। प्रदर्शनी स्थल पर हिंदी की पुस्तकों के लोकार्पण के लिए अलग से एक स्थान निर्धारित किया गया था जहाँ पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का लोकार्पण समानांतर रूप से चला।

समापन समारोह

समापन समारोह में उपस्थित माननीय मंत्रीगण व महानुभाव

तीन दिनों तक गंभीर चर्चा-परिचर्चा आदि के उपरांत 12 सितंबर, 2015 को अपराह्न में रामधारी सिंह दिनकर सभागार में विश्व हिंदी सम्मेलन का औपचारिक समापन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भारत के केंद्रीय गृह मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह उपस्थित हुए। अवसर पर माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान, भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, माननीय श्री केसरी नाथ त्रिपाठी, माननीया श्रीमती मृदुला सिन्हा, छत्तीसगढ़ के मुख्य मंत्री माननीय डॉ. रमण सिंह, हरियाणा के मुख्य मंत्री माननीय श्री मनोहर लाल खट्टर, मॉरीशस की शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन, विदेश राज्य मंत्री माननीय जनरल डॉ. वी. के. सिंह, राज्य सभा सांसद माननीय श्री अनिल माधव दवे तथा विदेश मंत्रालय में सचिव श्री अनिल वाधवा ने अपनी उपस्थिति से मंच की शोभा बढ़ाई।

मुख्य अतिथि माननीय श्री राजनाथ सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि ***हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल होनी चाहिए और इसके लिए भारत सरकार अपनी ओर से पूरा प्रयास करेगी।*** उन्होंने कहा कि ***यदि हम योग को 177 देशों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र में स्थान दिला सकते हैं तो मात्र 127 देशों के समर्थन से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में शामिल करने की क्षमता भी रखते हैं।*** आगे उन्होंने यह भी कहा कि ***गिरमिटिया मज़दूरों ने हिंदी को सबसे बड़ा योगदान दिया है और विदेशों में इस भाषा को मरने नहीं दिया।***

अपने स्वागत भाषण में मुख्य मंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि ***हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। हिंदी अत्यंत प्राचीन, उन्नत और श्रेष्ठ भाषा है और इसमें कोई कमी नहीं है। हमें हिंदी को मान-सम्मान दिलाने के लिए अपनी मानसिकता को बदलना होगा। मध्य प्रदेश में सारा कामकाज हिंदी में करने के लिए सरकार कृत संकल्प है।***

आगे उन्होंने कहा कि ***एक हद तक आज पूरे हिंदुस्तान में हिंदी की चर्चा हो रही है। यह सम्मेलन की सबसे बड़ी सफलता है। जिस तन्मयता के साथ विश्व भर से आए हिंदी प्रेमियों ने इसमें भाग लिया, वे सभी प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं।***

समापन समारोह का शुभारंभ विख्यात कवि श्री अशोक चक्रधर द्वारा रचित हिंदी गान से तथा मंचासीन मुख्य व विशेष अतिथियों का अंगवस्त्र से स्वागत करते हुए किया गया। समारोह में सम्मेलन के 12 सत्र में सभी विषयों पर प्रस्तुतियों और चर्चा के बाद स्वीकृत मंतव्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इसके अनुरूप सम्मेलन के मंतव्य पारित किए गए तथा अगला विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस में आयोजित किए जाने की घोषणा की गई। सम्मेलन में पारित प्रस्ताव का विस्तार आगे दिया जा रहा है।

सम्मेलन के गणमान्य प्रतिभागी

विश्व हिंदी सम्मान

विश्व हिंदी सम्मेलनों में विद्वानों को सम्मानित करने की परम्परा रही है। यह सम्मान भारत तथा विदेश में विविध प्रकार से हिंदी के प्रचार-प्रसार व उन्नयन से जुड़े हिंदी सेवियों को दिया जाता है। 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के अंत में यह निर्णय लिया गया था कि 10वें सम्मेलन से इसे ***विश्व हिंदी सम्मान*** के नाम से जाना जाएगा। दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह का एक प्रमुख अंग बीस भारतीय और बीस भारतेत्तर हिंदी सेवियों को ***विश्व हिंदी सम्मान*** प्रदान करने का कार्यक्रम रहा। 2015 में विश्व हिंदी सम्मान प्राप्त करने वाले 40 विद्वानों का परिचय पृ. 14-15-16 पर दिया जा रहा है।

विदेश राज्य मंत्री माननीय जनरल डॉ. वी. के. सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही 10वां विश्व हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम व अन्य गतिविधियाँ

सम्मेलन के दौरान पूरे दिवस के अकादमिक कार्यों के उपरांत रात्रि में हिंदी और भारतीय संस्कृति से जुड़े अन्य पक्षों को उभारने के उद्देश्य से अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। जहाँ प्रथम रात्रि का कार्यक्रम भारत की प्रांतीय, जनजातीय और लोक परंपरा से संबंधित नृत्य और संगीत को अत्यंत कलात्मक रूप से मंच पर दिखाया गया वहीं द्वितीय रात्रि की सांस्कृतिक प्रस्तुति 'अथ हिंदी कथा' शीर्षक से एक भव्य नृत्य नाटिका रही। हिंदी भाषा के इतिहास, विकास और साहित्य पर आधारित इस प्रस्तुति में शब्द,

संगीत, नृत्य, नाट्य और प्रकाश योजना का मनमोहक कलात्मक मिश्रण था। सम्मेलन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त सम्मेलन प्रतिभागियों को भोपाल के ऐतिहासिक व रोचक भ्रमण स्थलों, मानव संग्रहालय/जनजातीय संग्रहालय आदि का भ्रमण करवाने का भी पूरा प्रबंध किया गया था।

10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी समुदाय की उपस्थिति मॉरीशस

माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान के साथ माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन की औपचारिक भेंट

विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रतिभागिता हेतु मॉरीशस की ओर से देश में हिंदी के प्रचार, शिक्षण, प्रसारण आदि से जुड़ी महत्वपूर्ण संस्थाओं के अधिकारियों व प्रतिनिधियों तथा साहित्य लेखन, प्रचार, शिक्षण व मीडिया से जुड़े वरिष्ठ हिंदी सेवियों के साथ 17 सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल गठित किया गया था जिसका नेतृत्व मॉरीशस की शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन ने किया। प्रतिनिधि मंडल के सदस्य भारत में मॉरीशस के उप-उच्चायुक्त श्री जोयकर नायक, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, डॉ. श्रीमती सरिता बुधु, श्री अजामिल माताबदल, डॉ. श्रीमती विनोदबाला अरुण, श्री टहल रामदीन, श्री केसन बधु, श्रीमती सूर्यकान्ति गयान, डॉ. श्रीमती संयुक्ता भुवन रामसारा, श्री सत्यदेव टेंगर, श्री यन्तुदेव बुधु, श्री राजनारायण गति, डॉ. राजरानी गोबिन, श्री सत्यदेव प्रीतम, डॉ. हेमराज सुन्दर व श्री प्रह्लाद रामशरण रहे।

10 सितंबर को सम्मेलन के प्रथम दिवस के प्रथम समानांतर सत्र : 'गिरमिटिया देशों में हिंदी' में माननीया मंत्री जी ने ***प्रवासी देशों में हिंदी व उसका भविष्य विषय*** पर पत्र प्रस्तुत किया। अपनी प्रस्तुति में माननीया मंत्री जी ने प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण, संस्थाओं की भूमिका, मीडिया व पत्रकारिता की भूमिका, हिंदी व भूमंडलीकरण, मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की योजनाओं आदि की चर्चा करते हुए कुछ संभावनाओं की खोज की आवश्यकता पर बात की और कई ठोस सुझाव दिए जिनको खूब सराहा गया। सम्मेलन में मॉरीशस के प्रतिनिधि मंडल के अन्य सदस्यों ने भी पत्र प्रस्तुत किए। यह सम्मेलन वैचारिक मंच के साथ-साथ एक संपर्क मंच के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। शिक्षा मंत्री ने श्री शिवराज सिंह चौहान समेत भारत के अनेक वरिष्ठ नेताओं से भेंट करते हुए विश्व में हिंदी प्रचार की योजनाओं पर चर्चा की। साथ ही प्रतिनिधि मंडल में शामिल संस्थाओं के अधिकारियों के लिए भी यह सम्मेलन भारत और विदेश की संस्थाओं से संपर्क जोड़ने और योजनाओं पर विचार करने का अवसर रहा।

विदेश

फ़ीजी से आए प्रतिभागी

मॉरीशस के साथ-साथ विश्व के लगभग 39 देशों से प्रतिभागियों की उपस्थिति रही। जहाँ फिजी से एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतिनिधि मंडल ने अपनी प्रतिभागिता दी वहीं-श्रीलंका, दक्षिण अफ़्रीका, न्यू ज़ीलैंड, अमेरिका, कनाडा, बेल्जियम, सउदी अरब, चाद, जर्मनी, यू.के., पोलैंड, सूरीनाम, त्रिनीदाद, इटली, हंगरी, रूस समेत अनेक देशों के वरिष्ठ हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों और हिंदी सेवियों की उपस्थिति ने सम्मेलन को यथोचित वैश्विक रूप प्रदान किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

भोपाल, भारत में 10-12 सितंबर, 2015 को आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन ने निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए :

विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान देश-विदेश से आए अनेक विद्वानों, हिंदी मनीषियों एवं अन्य प्रतिभाशाली विशेषज्ञों ने 12 चयनित विषयों पर समानांतर सत्रों में गहन चर्चा के पश्चात जो अनुशंसाएँ की हैं, विदेश मंत्रालय एक विशेष समीक्षा समिति गठित कर उन अनुशंसाओं को यथोचित कार्यवाही हेतु विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों को अग्रेषित करे।

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन सन् 2018 में मॉरीशस में किया जाए जिस दौरान वहाँ स्थित विश्व हिंदी सचिवालय के नए भवन का औपचारिक उद्घाटन भी किया जाए।

एंड्रॉयड एप्लिकेशन 'दृष्यमान' पर उपलब्ध हुईं विश्व हिंदी सम्मेलन की झलकियाँ

विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों की झलकियाँ एंड्रॉयड मोबाइल फ़ोन पर भी उपलब्ध कराई गईं। इसके लिए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा एक नया एंड्रॉयड एप्लिकेशन 'दृष्यमान' विकसित किया गया था। इस एप्लिकेशन के माध्यम से सम्मेलन की दृष्य-श्रव्य झलकियाँ देखने की सुविधा दी गई। इस एप्लिकेशन के अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा सम्मेलन से जुड़ी सभी खबरें 'सम्मेलन समाचार' नाम से दैनिक पत्र में प्रकाशित की जाती रहीं। दूरदर्शन द्वारा भी सम्मेलन के मुख्य आकर्षण का सीधा प्रसारण किया गया तथा मध्य प्रदेश व संपूर्ण भारत के समाचार पत्रों में सम्मेलन से जुड़ी खबरों का खूब प्रकाशन हुआ।

हिंदी की खातिर एक छत के नीचे जुटे माइक्रोसॉफ़्ट, गूगल और एप्पल

10वें विश्व हिंदी सम्मेलन का भव्य व आकर्षक आयोजन स्थल हिंदी के प्रोत्साहन के साथ ही हिंदी के हाईटेक स्वरूप को बढ़ावा देने का भी स्थल बनकर उभरा जहाँ माइक्रोसॉफ़्ट, गूगल और एप्पल जैसी दुनिया की नामचीन कंपनियाँ एक छत के नीचे जमा हुईं। इनके अतिरिक्त वेबदुनिया, सीडैक आदि अनेक संस्थाओं द्वारा हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों को भी प्रदर्शनी में देखा जा सका।

हिंदी भाषियों के लिए हिंदी में सोशल नेटवर्किंग साइट 'मूषक'

10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में शिरकत करने आए पुणे के अनुराग गौड़ व उनके साथियों ने भोपाल में ट्विटर की तर्ज़ पर पूरी तरह हिंदी में काम करने वाला 'मूषक' सोशल नेटवर्किंग साइट देशवासियों और हिंदी प्रेमियों के लिए पेश किया।

मॉरीशस में हिंदी शिक्षण तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी-कार्यशाला

बाएँ से: श्री रामप्रकाश रामलगन, माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल व श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

27-29 जुलाई, 2015 को शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में विश्व हिंदी सचिवालय ने देश की गैर-सरकारी माध्यमिक पाठशालाओं के हिंदी शिक्षकों के लिए **"हिंदी शिक्षण तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी संगोष्ठी-कार्यशाला"** का आयोजन किया।

देश के हिंदी शिक्षकों को आई.सी.टी. के नवीनतम संसाधनों के प्रयोग से अवगत कराने के वृहद अभियान के तहत सचिवालय द्वारा 4 वर्ष पूर्व आरंभ हिंदी आई.सी.टी. संगोष्ठी-कार्यशालाओं की कड़ी में यह चौथा संस्करण महात्मा गांधी संस्थान एवं प्राइवेट सेकंडरी स्कूल ऑथोरिटी के सौजन्य से आयोजित हुआ जिसमें 100 से अधिक शिक्षकों को युनिकोड, हिंदी टंकन, इंस्क्रिप्ट, ऑडेसिटी सॉफ्टवेयर के प्रयोग आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण के बाद माध्यमिक पाठशाला के ये शिक्षक अपने कार्य में हिंदी और आई.सी.टी. के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से हिंदी सीखने में छात्रों की रुचि को प्रोत्साहित करने में सक्षम हो पाए।

संगोष्ठी-कार्यशाला का संचालन मुख्य रूप से भारतीय तकनीकविद् व आई.सी.टी. विशेषज्ञ श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री सुखलाल, तथा महात्मा गांधी संस्थान, प्राइवेट सेकंडरी स्कूल ऑथोरिटी के विशेषज्ञों द्वारा किया गया।

उद्‌घाटन समारोह

माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन

सोमवार 27 जुलाई, 2015 को महात्मा गांधी संस्थान, मोका के सभागार में संगोष्ठी-कार्यशाला के उद्‌घाटन के अवसर पर माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में तथा भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, शिक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री रामप्रकाश रामलगन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन ने अपने वक्तव्य में कार्यशाला की उपयोगिता तथा आवश्यकता पर बात की। माननीया मंत्री जी के अनुसार हिंदी के क्षेत्र मे आई.सी.टी. का प्रयोग हिंदी शिक्षण तथा भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने सचिवालय को बधाई दी कि उसके इस अभियान के चलते मॉरीशस हिंदी जगत का वह पहला देश बन गया जहाँ प्राथमिक से तृतीय स्तर तक हिंदी पढ़ाने वाला प्रत्येक शिक्षक आई.सी.टी. में इस प्रकार का प्रशिक्षण पा चुका है। हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण के आधुनिकीकरण के अपने विज़न को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि विश्व हिंदी सचिवालय और मॉरीशस का सपना है कि भारतीय डायस्पोरा के हर हिंदी शिक्षक, हर हिंदी प्रेमी तक यह प्रशिक्षण पहुँचाया जाए।

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल ने सचिवालय को कार्यशाला के आयोजन के लिए शुभकामनाएँ देते हुए भारतीय उच्चायोग के अडिग सहयोग का विश्वास दिलाया। श्री अनूप कुमार मुद्‌गल के अनुसार भाषा और प्रौद्योगिकी के संगम से संभावनाओं का नया क्षितिज खुलता है और उन संभावनाओं का लाभ उठा पाने के लिए किसी भी भाषा-भाषी के लिए भाषा के अंदर निहित शक्तियों को एक उदारतावादी मानसिकता के साथ देखना चाहिए।

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल

कार्यक्रम के आरंभ में विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने अतिथियों का स्वागत किया तथा सचिवालय के कार्यों, गतिविधियों व उपलब्धियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

उद्‌घाटन समारोह में अन्य अनेक गणमान्य अतिथियों के मध्य सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य, श्री अजामिल माताबदल; डॉ. नूतन पांडे, द्वितीय सचिव, भारतीय उच्चायोग; महात्मा गांधी संस्थान की महानिदेशिका, श्रीमती सूर्यकांति गयान, प्राइवेट सेकंडरी स्कूल ऑथोरिटी के निदेशक श्री महेश्वरनाथ लछुमन, आर्य सभा, हिंदी प्रचारिणी सभा व मॉरीशस के अन्य शैक्षिक व भाषा प्रचारक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं सदस्य उपस्थित थे।

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

पूर्ण सत्र

बाएँ से: श्री अविनाश उजोरा, श्री रिको ओक्बर व डॉ. कुमारदत्त गुदारी

हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में आई.सी.टी. के प्रयोग का अधिक से अधिक प्रचार करने के लिए तथा मॉरीशस में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत सभी संस्थाओं को इस परियोजना के साथ जोड़ने के उद्देश्य से उद्‌घाटन समारोह से पूर्व "आई.सी.टी.: नीति व शिक्षण प्रविधि" विषय पर एक पूर्ण सत्र (Plenary Session) का भी आयोजन किया गया जिसमें देश के हिंदी शैक्षणिक तथा प्रचारक संस्थाओं यथा ऋषि दयानंद संस्थान, आर्य सभा मॉरीशस, हिंदी संगठन, हिंदी प्रचारिणी सभा सहित अन्य संस्थाओं, भारतीय उच्चायोग व माध्यमिक पाठशालाओं के प्रतिनिधि तथा देश के कई हिंदी प्रेमी सक्रिय रूप से सम्मिलित हुए। अवसर पर श्री रिको ओक्बर, अध्यक्ष व प्रमुख वक्ता तथा श्री अविनाश उजोरा व डॉ. कुमारदत्त गुदारी वक्ता के रूप में मंचासीन थे। श्री ऑक्बर, श्री उजोरा और डॉ. गुदारी ने ***शिक्षा में आई.सी.टी. : नीति व शिक्षण प्रविधि*** विषय पर प्रस्तुतियाँ कीं।

संगोष्ठी-कार्यशाला

भारतीय तकनीकविद श्री बालेंदु शर्मा दाधीच

पूर्ण सत्र की वैचारिक पृष्ठभूमि तथा उद्‍घाटन समारोह में महानुभावों के प्रोत्साहन व मार्गदर्शन के साथ सभी प्रतिभागी हिंदी और आई.सी.टी. संबंधी ज्ञान की व्यावहारिक शिक्षा-प्राप्ति के लिए तैयार हुए और ''हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की उपलब्धियाँ व संभावनाएँ'', ''युनिकोड के इतिहास व प्रयोग'' तथा ''अपने कंप्यूटर पर हिंदी संबंधी प्रोग्राम'', ''सॉफ्टवेयर'', ''फ्रीवेयर'', ''फोंट'' आदि की जानकारी, स्थापना और उनके प्रयोग पर आधारित सत्रों के साथ कार्यशाला आरंभ हुई।

प्रथम दिवस के दो सत्रों के अतिरिक्त 28 और 29 जुलाई को कार्यशाला के अन्य सत्र लगे। इन सत्रों के दौरान हिंदी और आई.सी.टी. के उपलब्ध उपकरणों, मंचों, प्रोग्राम, सॉफ्टवेयर, आदि का शिक्षण में प्रयोग की विधियाँ सिखाई गईं तथा उनका व्यावहारिक प्रयोग करने की विधियाँ बताई गईं। ये सत्र आई.सी.टी. आधारित शिक्षण सहायक सामग्री की स्वयं तैयारी की प्रविधियाँ, स्थानीय रूप से तथा ऑनलाइन उपलब्ध संसाधनों पर विचारपूर्वक जानकारी, इनस्क्रिप्ट तकनीक के माध्यम से युनिकोड में हिंदी टंकन का अभ्यास, शैक्षणिक हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉग, सामाजिक नेटवर्किंग साइट तथा हिंदी पत्र व इ-पत्रिकाओं के निर्माण व प्रबंधन के अनुकूल दिशानिर्देश, नीति, नियम व संभावनाओं पर चर्चा, एनीमेशन, ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग और संपादन आदि के लिए उपलब्ध उपकरण व सुलभ सॉफ़्टवेयर के प्रयोग आदि विषयों पर केंद्रित रहे।

कार्यशाला में उपस्थित शिक्षक प्रतिभागी

मॉरीशस की शिक्षा प्रणाली की एक और विशेषता यह है कि यहाँ देश के अधिकांश प्राथमिक शिक्षालयों में इन्टरैक्टीव प्रोजेक्टर लगे हुए हैं। शिक्षण के वातावरण को प्रौद्योगिकी के प्रयोग से रोचक बनानेवाला यह उपकरण फ्रांस सरकार के सौजन्य द्वारा अफ़्रीकी क्षेत्र में शिक्षा के विकास के लिए चलाई जा रही 'सॉंकोरे' नामक परियोजना के तहत विकसित किया गया है। विश्व हिंदी सचिवालय की कार्यशालाओं में महात्मा गांधी संस्थान के भाषा संसाधन केंद्र के सहयोग से सभी शिक्षकों को कक्षा में इंटरैक्टीव इंटरफ़ेस व अन्य प्रौद्योगिकी प्रयोग के सिद्धांतों पर जानकारी दी जाती रही है। इस कार्यशाला में भी शिक्षकों को तकनीक की जानकारी दी गई तथा उपकरण प्रयोग का अभ्यास भी कराया गया। इन सत्रों का संचालन डॉ. कुमारदत्त गुदारी, सुश्री अंजलि चिंतामणि, श्रीमती संध्या देवी अंचराज़-नवसाह तथा श्री विवेक बिंदा ने किया।

अभ्यासोन्मुख प्रवृत्ति की इस कार्यशाला में सत्रों के अंतर्गत चर्चित विषयों पर अभ्यास का पूरा अवसर दिया गया। इस तरह शिक्षकों ने अति रुचि के साथ दो दिवसीय संगोष्ठी-कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को परियोजनाओं का रूप देते हुए प्रस्तुत किया। उनकी सराहनीय प्रस्तुतियों से कार्यशाला की सफ़लता व गुणवत्ता भी उजागर हुई।

इस पूरे आयोजन का समापन एक अनौपचारिक समारोह के साथ हुआ जिसके अंतर्गत विशेषज्ञ प्रशिक्षकों के प्रति प्रतिभागियों का आभार ज्ञापित किया गया तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

कार्यशाला में उपस्थित शिक्षक प्रतिभागी

अन्य गतिविधियाँ

सभागार को संबोधित करते हुए प्रो. काजुइको माचीदा

हिंदी और आई.सी.टी. कार्यशाला के संचालन के लिए पधारे श्री दाधीच और उसी समय मॉरीशस में तोक्यो युनिवर्सिटी ऑव फ़ॉरेन स्टडीज़ जापान के प्रसिद्ध हिंदी भाषाविद प्रो. काजुइको माचीदा की मॉरीशस में उपस्थिति का लाभ उठाते हुए सचिवालय ने 1 अगस्त, 2015 को ऋषि दयानंद संस्थान, पाय के छात्रों तथा देश के अन्य हिंदी सेवियों के ज्ञानलाभ के उद्देश्य से संस्था के सौजन्य से एक वक्तव्य व अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन किया। ऋषि दयानंद संस्थान बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. सुदर्शन जगेसर ने उपस्थित गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया तथा श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने प्रो. काजुइको माचीदा, हिंदी भाषाविद, तथा श्री बालेंदु शर्मा दाधीच का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। प्रो. माचीदा ने अपने संदेश में अपने कार्य व अनुभवों का उल्लेख किया। श्री बालेंदु शर्मा ने अपने वक्तव्य में छात्रों को हिंदी व आई.सी.टी. के संबंध में अत्यन्त महत्वपूर्ण जानकारी दी । अवसर पर संस्थान के बी.ए. तथा एम.ए. के उत्तीर्ण छात्रों को विशिष्ट अतिथियों द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। डॉ. उदय नारायण गंगू, डीन, ऋषि दयानंद संस्थान के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही समारोह संपन्न हुआ।

वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए श्री बालेंदु शर्मा दाधीच

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी दिवस 2015

14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने के निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में यह तिथि हिंदी-दिवस के रूप में मनायी जाती रही है। हिंदी के क्षेत्र के वैश्विक विस्तार के साथ कई वर्षों से विश्व के अनेक देशों में हिंदी प्रेमियों द्वारा यह दिवस अत्यंत निष्ठा के साथ मनाया जाता रहा है। 2015 में भारत के साथ-साथ अनेक देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन के महाकुम्भ के साथ ही हिंदी दिवस अत्यंत सम्मानपूर्वक मनाया गया। भारत और विदेश में हिंदी दिवस के आयोजन की कुछ चयनित रिपोर्ट विश्व हिंदी समाचार के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

हिंदी दिवस 2015 : विश्व भर में

जेद्दाह

14 सितंबर, 2015 को भारतीय वाणिज्य दूतावास, जेद्दाह, सउदी अरब द्वारा दूतावास के सभागार में सउदी अरब में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ कार्यालय के अध्यक्ष, श्री एम. आर. खुरेशी द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ तथा अपने वक्तव्य में उन्होंने सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनएँ दीं तथा भारत के समृद्ध तथा विविध सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार में हिंदी भाषा के महत्व पर बल दिया।

साभार : द टाइम्स ऑफ़ इंडिया

शिकागो

13 सितंबर, 2015 को महावाणिज्यदूत के संरक्षण में हिंदी प्रेमी संघ द्वारा आशियाना बैंक्वट भवन में भव्य रूप से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ मुख्य अतिथि ओ. पी. मीना, कौंसल, भारतीय वाणिज्य दूतावास तथा संघ के सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। अवसर पर मीना जी ने अपने उद्‌बोधन में भारतीय संस्कृति, अस्तित्व तथा एकता को बनाए रखने में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका को उभारा तथा भारतीय-अमेरिकी लोगों के बीच हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने पर बल दिया। समारोह के अंतर्गत सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी हुईं और समाप्ति श्री कमल गुप्त द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुई। समारोह में लगभग 350 लोग उपस्थित थे।

साभार : शिकागो ट्रिब्यून

जर्मनी

14 सितंबर, 2015 को भारतीय वाणिज्य दूतावास, फ्रैंकफ़र्ट द्वारा हिंदी दिवस मनाया गया। कौंसल श्री रवीश कुमार ने गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया तथा भारत व विदेश में हिंदी की महत्ता पर चर्चा की। समारोह में जर्मनी के हिंदी विद्यार्थी सहित अनेक हिंदी विद्वानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अवसर पर फ्रैंकफ़र्ट की प्रसिद्ध हिंदी लेखिका डॉ. इंदु प्रकाश पाण्डेय की दो

पुस्तक प्रस्तुत की गई। मैन्ज़ विश्वविद्यालय तथा हैडलबर्ग विश्वविद्यालय के दो वक्ताओं को भी अत्यंत रुचि के साथ सुना गया।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, फ्रैंकफ़र्ट वेबसाइट

चीन

11 सितंबर, 2015 को भारतीय दूतावास, बीजिंग द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर सलाहकार (राजनीतिक) श्री विनोद के. जाकोब ने हिंदी भाषा के विकास में भारतीय सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका उभारते हुए भारतीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ सभा में दिए गए हिंदी भाषण की प्रशंसा की। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में ही वहाँ कई प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया था।

साभार : भारतीय दूतावास, बीजिंग चीन वेबसाइट

ब्रैम्पटन, कनाडा

12 सितंबर, 2015 को हिंदी राइटर्स गिल्ड ने ब्रैम्पटन लाईब्रेरी की चिंगूज़ी शाखा के सभागार में हिंदी दिवस का आयोजन किया। यह कार्यक्रम केवल हिंदी स्कूलों के बच्चों के लिए आयोजित किया गया था तथा प्रतिभागी टोरंटो के विभिन्न क्षेत्रों से ब्रैम्पटन पहुँचे। कार्यक्रम में आमन्त्रित विशेष अतिथियों में भारत के काउंसलाधीश श्री अखिलेश मिश्र, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रीति मिश्र, अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी चेतना' के संस्थापक, संपादक श्री श्याम त्रिपाठी, श्री कमल भाटिया तथा उनकी पत्नी श्रीमती रश्मि भाटिया थे। कार्यक्रम की संचालिका भुवनेश्वरी पांडे रहीं। गिल्ड की ओर धन्यवाद ज्ञापन देते हुए डॉ. शैलजा सक्सेना ने इस कार्यक्रम हेतु आर्थिक सहायता करनेवालों, आयोजक मंडल, हिंदी अध्यापकों, बच्चों के माता-पिता और सबसे बढ़कर बच्चों की सराहना की।

सुमन कुमार घई की रिपोर्ट

जोहान्सबर्ग, गोटैंग, दक्षिण अफ़्रीका

12 सितंबर, 2015 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका द्वारा भारतीय महावाणिज्यदूत के कार्यालय में गौटेंग क्षेत्र के लिए परीक्षा कार्यशाला 2015 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गौटेंग प्रान्त में हिंदी शिक्षा संघ के तत्वावधान में कार्यरत रंडबर्ग, मिड्रैंड बेनोनी, लेनेसिया, स्प्रिंग्स, सैंडटन और सेंचूरियन आदि की हिंदी पाठशालाओं से अध्यापकों सहित लगभग चालीस छात्र एकत्रित हुए जिनको संघ के अध्यापकों श्रीमती भवानी प्रिथिपाल, श्रीमती अदीति महाराज व श्री अकेश सिंह द्वारा अक्टूबर के लिए निर्धारित परीक्षाओं के लिए तैयार किया गया। समारोह में उपस्थित शिक्षकों में श्री हीरालाल शिवनाथ और श्री वीरजानंद गरीब भी शामिल थे।

इस अवसर पर हिंदी शिक्षण को अधिक रोचक बनाने के उद्देश्य से पाठशाला में शिक्षकों द्वारा प्रयोग में लाए जानेवाले कुछ चार्ट का लोकार्पण और हिंदी शिक्षकों व पाठशालाओं के अधिकारियों के बीच उनका वितरण किया गया। यह शिक्षण सामग्री तैयार करने वाले हिंदी शिक्षा संघ और उसकी गौटेंग शाखा का उद्देश्य है इनको देश भर के विद्यालयों में वितरित करना ताकि छात्रों के लिए पढ़ाई और रोचक बनाई जा सके।

इस मुख्य कार्यक्रम के अतिरिक्त इस वर्ष लेनेसिया की पाटिदार पाठशाला और प्रेटोरिया की एमिटी अंतरराष्ट्रीय पाठशाला में भी हिंदी दिवस के अवसर पर गतिविधियों का आयोजन किया गया।

साभार : हिंदी खबर –दक्षिण अफ़्रीका, अंक सितंबर 2015

हिंदी दिवस 2015

भारत

राष्ट्रपति भवन, भारत

14 सितंबर, 2015 को राष्ट्रपति भवन में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा राष्ट्रभाषा पुरस्कार प्रदान किए गए। अवसर पर राष्ट्रपति जी ने सम्मानितों को बधाई देते हुए सभी से विनम्र आग्रह किया कि वे हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एकजुट हों। हिंदी ने आज़ादी के बाद कई महत्वपूर्ण पड़ाव हासिल किए हैं।

राष्ट्रपति जी ने आगे कहा कि हिंदी को भारतीय चिंतन और संस्कृति का वाहक माना गया है। यह भाषा हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता तथा आधुनिक प्रगति के बीच एक कड़ी भी है। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में बढ़े ताकि ग्रामीण जनता सहित सभी की सहभागिता देश की प्रगति में सुनिश्चित की जा सके। इसके लिए ज़रूरी है कि तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि कार्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि तेज़ी से बदलते वैश्विक आर्थिक परिवेश पर हिंदी की अपनी एक छाप है। दुनिया भर में बसे हुए लाखों प्रवासी भारतीय हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। इससे हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान मिली है।

साभार : 'भारत के राष्ट्रपति' वेबसाइट

दिल्ली

14 सितंबर, 2015 को मंथन एस.वी.के., दिल्ली के सभी केंद्रों में भव्य रूप से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर बच्चों की भाषाई सृजनात्मकता तथा शैक्षिक कुशलता को परिष्कृत करने के उद्देश्य से श्रुतलेख, हस्तलेख, कविता वाचन, कहानी वाचन, संगीत, आशुवाक आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

साभार : न्यूज़ एंड इवेंट्स

देहरादून

14 सितंबर, 2015 को देहरादून के विभिन्न शैक्षिक तथा सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। विभिन्न विभागों से आए विद्यार्थियों ने 'आधुनिक भारत के निर्माण एवं सांस्कृतिक विरासत सहेजने में हिंदी का योगदान' विषय पर विचार-विमर्श किया।

इस अवसर पर दून विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री बी.एम. हरबोला ने कहा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए विश्वविद्यालय जल्द ही हिंदी में कुछ स्नातक कोर्स तथा अनुवाद अध्ययन का एक डिप्लोमा कोर्स अपने पाठ्यक्रम में जोड़ेंगे।

राष्ट्रीय दृष्टि विकलांगता संस्थान में भी हिंदी दिवस का भरपूर आनंद उठाया गया। वहाँ पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ जिसमें छात्रों ने भारी संख्या में भाग लिया तथा निदेशक श्री विरेन्द्र सिंह द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा हिंदी दिवस से एक सप्ताह पूर्व हिंदी सप्ताह का आयोजन हुआ जिसका समापन 14 सितंबर, 2015 को हुआ जिसमें महानिदेशक श्री अश्विनी कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

साभार : द टाइम्स ऑफ़ इंडिया

इंदौर

14 सितंबर, 2015 को ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन हुआ। अवसर पर पधारे मुख्य अतिथि श्रीमती चौधरी तथा डॉ. वोहरा ने राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी की महत्ता पर विशेष बल देते हुए युवा पीढ़ी को हिंदी भाषा के प्रति उत्साहित किया। बच्चों द्वारा हिंदी की महिमा का गुणगान हुआ तथा अध्यापकों द्वारा कविता-पाठ हुआ। समारोह का समापन संगीत अध्यापक के मधुर हास्यानुकृति ग़ज़ल से हुई।

साभार : ग्लोबल स्कूल न्यूज़.ऑर्ग

राँची

14 सितंबर, 2015 को राँची के विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लक्ष्य से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक हिंदी का जश्न मनाया।

हैवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा आयोजित हिंदी दिवस के अवसर पर श्री ए.वी. कृष्णा ने हिंदी भाषा की महत्ता पर बल दिया जबकि दक्षिण-पूर्वी रेलवे के प्रबंधक श्री आर. यादव ने आधिकारिक कार्यकलाप में अत्यधिक हिंदी के प्रयोग पर जोड़ दिया।

मेकौन द्वारा हिंदी पखवाड़े का भव्य आयोजन हुआ जिसका उद्‌घाटन मेकौन के निदेशक (प्रौद्योगिकी) श्री एस.आर. सेनगुप्ता ने किया। साथ ही भारतीय स्टेट बैंक, प्रभागीय राजभाषा कार्यालय, दक्षिण छोटानागपुर विभाग आदि कार्यालयों में हिंदी भाषा का जश्न मनाया गया।

साभार : द पायोनियर.कॉम

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र बने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलसचिव

3 अगस्त, 2015 को प्रसिद्ध साहित्यकार एवं अनुवादक, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलसचिव के रूप में कार्यभार संभाला। ओडिशा के रायरंगपुर, मयूरगंज में जन्मे डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र 2015 तक एन.टी.पी.सी. लिमिटेड में महा-प्रबंधक के रूप में कार्यरत थे। आप विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में 2008 से 2011 तक उप-महासचिव के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। डॉ. मिश्र की ओडिया से हिंदी अनुवाद में 70 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर भी रह चुके हैं। डॉ. मिश्र को हिंदी अनुवाद के लिए साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया है। आपको दक्षिण अफ़्रीका के जोहांसबर्ग में संपन्न 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। आपकी पुस्तकें भारतीय ज्ञानपीठ, साहित्य अकादेमी, नेशनल बुक ट्रस्ट, राजकमल तथा राजपाल एंड सन्स आदि ख्यातिप्राप्त प्रकाशन संस्थाओं से प्रकाशित हुई हैं। आप भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की हिंदी सलाहकार समिति में कार्यरत रहे हैं।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

यू.एस.ए. से आए 20 विद्यार्थी हिंदी सीखने इंदौर पहुँचे

12 जुलाई, 2015 को अमेरिका से 20 विद्यार्थी अपने शिक्षक कोऑर्डिनेटर रूथ प्लेकस्टोक के साथ डेली कॉलेज, इंदौर हिंदी सीखने पहुँचे। इन विद्यार्थियों के अनुसार भारत में मौजूद विविधता में एकता ही उन्हें यहाँ खींच लाई। भारत तेज़ी से एक शक्तिशाली देश के रूप में विश्व के सामने आ रहा है यही कारण है कि खुद अमेरिका की सरकार इस योजना को बढ़ावा दे रही है।

भारत पहुँचे इन 20 बच्चों में से 15 विद्यार्थियों को 6 सप्ताह और 5 विद्यार्थियों को 10 महीने तक इंदौर में रहकर हिंदी सीखाने की व्यवस्था की गई। कुछ छात्र बाद में भारत में ही रहकर काम भी करने की इच्छा के साथ भारत पहुँचे थे। ए.एफ.एस. लैंग्वेज लर्निंग प्रोग्राम के तहत अमेरिका से भारत आए इन विद्यार्थीयों की पढ़ाई डेली कॉलेज, एमेराल्ड हाइट्स व शिशुकुंज इंटरनेशनल स्कूल में करवाने का प्रबंध किया गया और रहने का इंतज़ाम स्थानीय परिवारों के साथ किया गया।

इन विदेशी छात्रों के रहने का प्रबंध इंदौर के स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के घर ही किया गया जहाँ वे इन विद्यार्थियों के स्थानीय भाई-बहन समान रहेंगे तथा उनके अभिभावकों को माँ-पिताजी कहकर ही संबोधित करेंगे। इसके पीछे उद्देश्य इन बच्चों को करीब से भारत की संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार और दिनचर्या से रूबरू करवाना रहा।

इन विद्यार्थियों को दो हिस्सों में हिंदी सिखाने का निर्णय लिया गया था- शुरुआत में रोमन लिपि में इन्हें बोलचाल की हिंदी सिखाई जाए और इसके बाद इन्हें साहित्यिक हिंदी पढ़ाई जाए। पूरी कार्यप्रणाली विषय पर आधारित है जैसे बाज़ार जाते वक्त या यातायात के समय हिंदी में कैसे बात की जाए।

साभार : 'एन.एस.एल.आई. फ़ॉर युथ इन्टरैक्टीव' साइट

श्री नरेंद्र मोदी ने किया उज़्बेक-हिंदी शब्दकोश का लोकार्पण

7 जुलाई, 2015 को भारत के प्रधान मंत्री महामहिम नरेंद्र मोदी की उज़्बेकिस्तान यात्रा के दौरान उनके हाथों प्रथम उज़्बेक-हिंदी शब्दकोश का लोकार्पण हुआ। अवसर पर उज़्बेकिस्तान के माननीय प्रधान मंत्री तथा इन्डॉलोजिस्ट राख़मातोव भी उपस्थित थे। यात्रा के दौरान महामहिम मोदी जी ने हिंदी भाषा के महत्व पर बल देते हुए देश की आर्थिक प्रगति में इस भाषा की आवश्यकता को उभारा। उनका मानना है कि जिन देशों की आर्थिक स्थिति मज़बूत है, उनको अपने देश के नागरिकों को अपनी भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा भाषा की जड़ों को और विकसित करने में सहायता करनी चाहिए। प्रधान मंत्री मोदी जी ने शिक्षा की आवश्यकता पर भी बात की। उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व के विकास के लिए भाषा की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। भाषा ही एक अजनबी देश में दो अनजान लोगों के बीच संप्रेषण स्थापित करती है।

साभार : एक्ज़ाम्सवॉच.कॉम

जल्द ही रशियन टी.वी. पर हिंदी में प्रसारण

20 अगस्त, 2015 को औपचारिक भारतीय मीडिया कॉर्पोरेशन प्रसार भारती तथा रूसी कम्पनी डिजिटल टी.वी. ओ.जे.एस.सी. (डी.टी.वी.) के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। समझौते के तहत दोनों कम्पनियों के बीच प्रदत्त टी.वी. चैनलों को बाँटने तथा संयुक्त रूप से सामग्री निर्माण करने का निर्णय लिया गया।

अगले वर्ष से भारतीय दर्शक रूसी फ़िल्में, कार्टून, डॉक्यूमेंटरी व शैक्षणिक कार्यक्रम देख पाएँगे। डी. टी.वी. ने अपने उत्पादनों की डबिंग भी शुरू कर दी है।'ज़ फ़ार ईस्टर्न लेपर्ड' वह पहली फ़िल्म है जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी व हिंदी में किया जाएगा।

दूसरी ओर वी.जी.टी.आर.के. (All-Russia State Television and Radio Broadcasting Company) रूसी दर्शकों के लिए बॉलीवुड फ़िल्मों का प्रसारण करेगा।

साभार : रशिया एंड इंडिया रिपोर्ट

सिऐटल में पाँचवा झिलमिल कवि सम्मेलन

20 सितंबर, 2015 को पर्यटन नगर सिऐटल क्षेत्र, अमेरिका में स्थित 'बैल्व्यू यूथ थिएटर' में प्रतिध्वनि संस्था द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में पाँचवें 'झिलमिल कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। सम्मेलन दो सत्रों में आयोजित किया गया जिनमें अनेक वरिष्ठ व नवोदित कवियों द्वारा काव्य-पाठ हुआ। साथ-साथ श्री अभिनव शुक्ल की तीसरी काव्य कृति 'हम भी वापस जाएँगे' का लोकार्पण माननीय अतिथियों तथा नगर के कुछ गणमान्य अतिथियों द्वारा संपन्न हुआ। सम्मेलन हेतु प्रतिध्वनि संस्था से जुड़े अनेक स्वयंसेवकों ने अपना सहयोग दिया तथा मंच संचालन कवि अभिनव शुक्ल ने किया।

डॉ कविता वाचक्नवी की रिपोर्ट

हैदराबाद विश्वविद्यालय में कवि त्रिलोचन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

20 अगस्त, 2015 को कवि त्रिलोचन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में विभाग के प्राध्यापक डॉ. एम. आंजनेयुलु ने विद्वान वक्ताओं का स्वागत किया। हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. आर. एस सर्राजु ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। आपने कवि त्रिलोचन को 'कोशकार त्रिलोचन' के रूप में संबोधित करते हुए उनको याद किया। कवि त्रिलोचन के पुत्र और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व दिल्ली में पत्रकार श्री अमित प्रकाश ने कवि त्रिलोचन को भारतीयता का हिमायती, हिंदी-उर्दू के दोआब का समर्थक एवं किसानों-मज़दूरों के आंदोलनों का पक्षधर बताया। उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्रो. शीला मिश्र ने कवि त्रिलोचन के जीवन दर्शन पर बहुत ही विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया। हिंदी विभाग के शोधार्थियों और छात्रों ने मिलकर कवि त्रिलोचन की कविताओं की प्रदर्शनी लगाई।

साभार : स्वतंत्रवार्ता.कॉम

'आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

28 जुलाई, 2015 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा 'आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार एवं माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र उपस्थित थे। उद्घाटन के प्रारंभ में पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अतिथियों द्वारा उनके जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला गया। उद्घाटन सत्र में श्री अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि मीडिया के माध्यम से सामाजिक बदलाव के लिए हमें सकारात्मक पत्रकारीय भाव रखना चाहिए। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस अवसर पर अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अध्यक्ष प्रो. देवराज ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी स्मारिका एवं शोध पत्र पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती की पूर्व संध्या पर परिचर्चा का आयोजन

3 अगस्त, 2015 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती की पूर्व संध्या पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। अन्य संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में सेवाग्राम अस्पताल के सरोजिनी नायडू सभागार में आयोजित 'हिंदी काव्य का बदलता स्वरूप : 20वीं सदी से आज तक' विषय पर कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने वक्तव्य दिया। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त के साहित्य एवं जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का आरंभ अतिथियों द्वारा महात्मा गांधी, कस्तुरबा गांधी व सुशीला नायर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने किया व आभार ज्ञापन डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने ।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

भाषा सहोदरी-हिंदी : दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

12-13 जुलाई, 2015 को भाषा सहोदरी द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया गया। अधिवेशन को दो सत्रों में बाँटा गया जिसमें भारत के लगभग सभी प्रदेशों के हिंदी प्रेमी, रचनाकार और साहित्यकार सम्मिलित हुए। अधिवेशन के प्रथम सत्र में वरिष्ठ कवियों के साथ नवोदित कवियों ने काव्य-पाठ किया। मंच संचालन प्रिया वच्छानी, एकता सारदा एवं मधुर परिहार ने किया। अधिवेशन के दूसरे सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री उदित राज तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रभा ठाकुर उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने की। दूसरे सत्र में साहित्यिक परिचर्चा का विषय 'समकालीन रचनाकारों की एन.सी.ई.आर.टी. (NCERT) में भागीदारी' था। डॉ. उदित राज ने अपने उद्बोधन में भाषा सहोदरी-हिंदी संगठन के प्रयासों की प्रशंसा की तथा अपने हर प्रकार के सहयोग की बात कही। भाषा सहोदरी-हिंदी के मुख्य संयोजक श्री जयकान्त मिश्रा ने संस्था के उद्देश्यों का उल्लेख किया। कार्यक्रम में मंच संचालन श्री सुधाकर पाठक ने किया।

श्री जय कान्त मिश्रा की रिपोर्ट

स्वदेश भारती अमृत महोत्सव-संगोष्ठी

15 अगस्त, 2015 को आशीर्वाद इंग्लिश स्कूल में कान्यकुब्ज सभा एवं शिक्षा मंडल, रायपुर द्वारा स्वदेश भारती अमृत महोत्सव-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय था 'आज़ादी के बाद हिंदी'। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ. केसरीलाल वर्मा तथा राष्ट्रीय हिंदी अकादमी के अध्यक्ष कवि डॉ. स्वदेश भारती थे। हिंदी के अंतरराष्ट्रीय लेखक एवं अज्ञेय द्वारा संपादित सप्तक के महत्वपूर्ण कवि डॉ. स्वदेश भारती की 75 वर्षों की सतत साधना एवं समर्पण भाव हेतु उनको सम्मानित किया गया। डॉ. भारती तथा डॉ. वर्मा ने बताया कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए तथा उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा में हिंदी भाषा में लिखी गयी पुस्तकों को शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि लोग अपनी भाषा में पढ़ें और काम करें। समारोह में मुख्य रूप से अनेक लेखकों व साहित्यकारों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्री हेमंत तिवारी एवं डॉ. सुधीर शर्मा ने किया।

संजय अवस्थी की रिपोर्ट

'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ' का लोकार्पण

20 सितंबर, 2015 को नई दिल्ली के प्रवासी भवन में काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा ऐतिहासिक 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ' का लोकार्पण किया गया। लोकार्पण समारोह राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय स्मारक समिति, रायबरेली और राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में पत्रकार गौरव अवस्थी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी से जुड़ी स्मृतियों पर प्रस्तुति की। ग्रंथ के लोकार्पण और विमर्श के मौके पर साहित्य अकादमी के अध्यक्ष और विख्यात लेखक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग निर्माता थे। समारोह के अध्यक्ष, प्रो. मैनेजर पांडे ने अपने उद्‌बोधन में इस ग्रंथ की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि यह भारतीय साहित्य का विश्वकोश है। इस ग्रंथ में महात्मा गांधी, प्रेमचंद, सुमित्रानंदन पंत आदि दिग्गज हस्तियों की रचनाएँ और लेख संकलित हैं। आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य के निर्माता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्मान में 1933 में प्रकाशित हिंदी का यह पहला अभिनंदन ग्रंथ दुर्लभ दशा में था। 83 वर्षों के बाद नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया द्वारा इस ग्रंथ को पुनर्प्रकाशित किया गया। नीडरलैंड से आईं हुई पुष्पिता अवस्थी, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया की निदेशिका डॉ. रीटा चौधरी, प्रख्यात पत्रकार श्री रामबहादुर राय, वरिष्ठ पत्रकार व राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री अरविंद कुमार सिंह ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार और लेखक पंकज चतुर्वेदी ने किया।

श्री गणपत तेली की रिपोर्ट

लखनऊ में 'बनास जन' का लोकार्पण

12 जुलाई, 2015 को जयशंकर प्रसाद सभागार, केसरबाग में इप्टा लखनऊ द्वारा आयोजित साहित्य-संस्कृति की पत्रिका 'बनास जन' के विशेषांक 'आख्यान में अखिलेश' का लोकार्पण संपन्न हुआ। कार्यक्रम को दो सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम सत्र में 'बनास जन' के विशेषांक पर अनेक कवियों व पत्रिकाओं के संपादकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस विशेषांक के संपादक और युवा कथाकार राजीव कुमार ने अखिलेश को चुनने के कारण को स्पष्ट करते हुए बताया कि भूमंडलीकरण के दौर में अखिलेश की कहानियाँ जनमानस को छूती हैं तथा संप्रेषण की जटिलता की चुनौतियों को स्वीकार करती हैं। दूसरे सत्र में 'वर्तमान चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक पत्रकारिता' विषय पर चर्चा हुई। कार्यक्रम का संचालन युवा कथाकार सूर्य बहादुर थापा ने किया।

आभार : गनपत तेली

पहली बार पाकिस्तान में किसी को मिली हिंदी में एमफिल

नेशनल यूनिवर्सिटी ऑव मॉडर्न लैंग्वेजज़, इस्लामाबाद में शाहीन ज़फ़र को हिंदी में एमफिल की डिग्री प्रदान की गई। शाहीन ज़फ़र ने 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी चित्रण (1947-2000)' विषय पर अपना शोध प्रोफ़ेसर इफ़्तिखार हुसैन की देख-रेख में संपन्न किया। वह विश्वविद्यालय पाकिस्तान में पहला विश्वविद्यालय बना जिसने नैश्नल यूनिवर्सिटी ऑव मॉडर्न लैंग्वेजज़ की छात्रा शाहीन ज़फ़र को हिंदी में एमफिल की डिग्री प्रदान की। इसी प्रकार शाहीन ज़फ़र की यह उपलब्धि भी रवायत से हटकर है जिससे यही आशा है कि भाषा और संस्कृति की दृष्टि से हिंदी के साथ ऐतिहासिक संबंध रखनेवाले पाकिस्तान में अन्य हिंदी प्रेमियों के लिए मार्ग प्रशस्त होगा।

साभार: जनसत्ता.कॉम

उपन्यास 'रंग राची' का लोकार्पण

जुलाई में साहित्य अकादमी सभागार, मंडी हाउस, नई दिल्ली में सुधाकर अदीब के मीरा बाई की संघर्ष-यात्रा को केन्द्र में रखकर लिखे गए उपन्यास 'रंग-राची' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री विश्वनाथ त्रिपाठी उपस्थित थे।

अपने उद्‌बोधन में वरिष्ठ आलोचक श्री नामवर सिंह ने कहा कि हिंदी में बहुत कवयित्रियाँ हुई हैं लेकिन जो स्थान मीरा ने बनाया वह सब के लिए आदर्श है। मीरा स्त्रियों के स्वाभिमान की प्रतीक हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विश्वनाथ त्रिपाठी ने इस उपन्यास की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह बहुत ही पठनीय उपन्यास है। इनका उपन्यास घी का लड्डू है और यही इसकी सार्थकता भी है। सुधाकर अदीब ने इस उपन्यास को लिखते समय इतिहास के साथ न्याय किया है।

कार्यक्रम का संचालन अनुज ने किया व धन्यवाद ज्ञापन राजकमल समूह के निदेशक अशोक महेश्वरी ने किया। इस मौके पर साहित्य जगत के बहुसंख्य गणमान्य लोग उपस्थित हुए।

साभार: भादस4मीडिया.कॉम

हिंदी साहित्य के दिग्गजों की 9 पुस्तकों का लोकार्पण

11 अगस्त, 2015 को त्रिवेणी कला संगम ऑडिटोरियम, मंडी हाउस में पत्रकारिता और हिंदी साहित्य के दिग्गजों की 9 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। दैनिक हिन्दुस्तान के प्रधान संपादक शशि शेखर की 'खंड-खंड पाखंड', 'बदलाव की आहटें', हिंदी कथाकार रवींद्र कालिया की 'मेरे हम कलम', हिंदी कथाकार एवं अंग्रेज़ी की चर्चित लेखिका ममता कालिया की 'स्त्री विमर्श का यथार्थ', हिंदी के कवि दिविक रमेश की 'समझा परखा', हिंदी कथाकार गंगा प्रसाद विमल की 'अवतरण', वरिष्ठ साहित्यकार से. रा. यात्री की पुस्तक 'समीप और समीप', 'काव्यकृति' तथा 'काव्य का पाठ' का लोकार्पण किया गया। अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. केदारनाथ सिंह तथा समूह संपादक ए. बी. पी न्यूज़ नेटवर्क, शाजी जमां उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वर्धा के पूर्व कुलपति श्री विभूति नारायण राय ने की। पुस्तकों का लोकार्पण डॉ. केदारनाथ सिंह, शाजी जमां व श्री राय द्वारा किया गया। स्वागत भाषण में प्रतिष्ठित कवि दिविक रमेश ने मंच पर उपस्थित सभी साहित्यकारों और विशिष्ट जनों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर दैनिक हिंदुस्तान के प्रधान संपादक शशि शेखर, सांसद डी. पी. त्रिपाठी और शाजी जमां ने भी सभा को संबोधित किया और पत्रकारिता तथा साहित्य के स्वरूप और उनके आदर्श पर विचार प्रकट किए। श्री विभूति नारायण राय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्री दिविक रमेश की रिपोर्ट

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा सम्मान समारोह

14 सितंबर, 2015 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा सम्मान समारोह - वर्ष 2014 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हिंदी साहित्य से जुड़े देश एवं विदेश के विद्वानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री माननीय श्री अखिलेश यादव उपस्थित थे। माननीय मुख्य अतिथि ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में टी.वी. चैनलों सहित अन्य जनसंचार साधनों का उल्लेख करते हुए कहा कि आनेवाले समय में हिंदी का प्रसार और अधिक तेज़ी से होगा। तमाम विकसित देशों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि अपनी भाषा में काम करनेवाले देश ही तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़े हैं। उन्होंने तकनीक और विज्ञान के क्षेत्र में भी हिंदी के अधिक से अधिक उपयोग पर बल दिया जिससे आनेवाली पीढ़ी का स्वाभाविक विकास हो। साथ-साथ विधान सभा अध्यक्ष, श्री माता प्रसाद पाण्डेय ने हिंदी के बढ़ते प्रसार को रेखांकित करते हुए कहा कि साहित्य सृजन से भाषा और अधिक परिमार्जित होती है। कार्यक्रम में साहित्यकार श्री काशीनाथ सिंह, श्रीमती मृदुला गर्ग, श्री विनोद कुमार शुक्ल, डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ. राम कृष्ण राजपूत, कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति बंगलूरु, श्री प्रताप दीक्षित, डॉ. पुष्पा भारती, श्री राज कृष्ण मिश्र, डॉ. राम कठिन सिंह, डॉ. रंगनाथ मिश्र 'सत्य', डॉ. रमा सिंह, श्री कमल नयन पाण्डेय, श्री मोहनदास नैमिशराय, श्री बलराम, श्री उमा शंकर सिंह यादव 'पथिक', श्री राधा गोविन्द पाठक, श्रीमती वेदा राकेश, डॉ. ओम प्रकाश मिश्र, प्रो. यतीश अग्रवाल, श्री विष्णु नागर, श्रीमती पुष्पा सक्सेना (यू.एस.ए), डॉ. चक्रधर नलिन, डॉ. भाल चन्द्र तिवारी, स्व. श्री यज्ञ शर्मा, डॉ. हनुमान प्रसाद गुप्त, डॉ. तरसेम गुजराल, प्रो. गजानन चव्हाण, श्री जगमल सिंह, डॉ. विजय कुमार महांति, डॉ. ए. भवानी, श्री कृष्ण शर्मा डोगरी, डॉ. गौरी शंकर रैणा, श्री मासूम गाजियाबादी, डॉ. एम. रंगय्या, डॉ. के. एम. मालती, श्री कीर्ति नारायण मिश्र, डॉ. रेवा प्रसाद द्विवेदी, डॉ. हेमराज सुन्दर, श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल, डॉ. विनोद जैन, डॉ. सुधीर कुमार शुक्ला, श्री शंकर पाण्डेय तथा सुश्री गज़ाल जैगम को सम्मानित किया गया। अवसर पर राजनैतिक पेंशन मंत्री, माननीय श्री राजेन्द्र चौधरी, प्रमुख सचिव भाषा, श्री किशन सिंह अटोतिया, बड़ी संख्या में साहित्य जगत से जुड़े लोग एवं सम्मानित विद्वानों के परिजन उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन हिंदी संस्थान के निदेशक डॉ. सुधाकर अदीब ने किया।

डॉ. हेमराज सुन्दर को हिंदी विदेश प्रसार सम्मान

सम्मान समारोह में प्रसिद्ध मॉरीशसीय साहित्यकार डॉ. हेमराज सुन्दर को हिंदी विदेश प्रसार सम्मान से अलंकृत किया गया। डॉ. हेमराज सुन्दर महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में वरिष्ठ प्राध्यापक हैं। आप मॉरीशस में हिंदी साहित्य अकादमी के संस्थापक व अध्यक्ष हैं।

साभार : यू.पी. न्यूज़

जयप्रकाश मानस को मुंशी प्रेमचंद सम्मान

31 जुलाई, 2015 को नेल्सन कला सोसायटी, भिलाई में प्रतिवर्ष दिया जानेवाला प्रतिष्ठित मुंशी प्रेमचंद सम्मान हिंदी के सुपरिचित कवि, निबंधकार जयप्रकाश मानस को दिया गया। यह सम्मान पिछले 20 वर्षों से लगातार भारतीय ग्राम्य समाज के यथार्थ और लोक-जीवन पर केंद्रित रचनात्मक लेखन और अबाध क्रियाशीलता के लिए दिया जाता है। श्री मानस की अब तक 15 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित व पुरस्कृत हो चुकी हैं जिनमें कविता, ललित निबंध, समीक्षा आदि प्रमुख हैं। श्री मानस को यह सम्मान प्रेमचंद जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह में प्रदान किया गया। इस अवसर पर 'प्रेमचंद और भारतीयता' पर एक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

आभार : पी. कानस्कर, प्रवक्ता, नेल्सन कला सोसायटी, भिलाई

द्वितीय ढींगरा फ़ाउण्डेशन यू.एस.ए हिंदी चेतना सम्मान समारोह

30 अगस्त, 2015 को अमेरिका के मोरिस्विल्ल में हिंदू भवन कल्चरल हॉल, 309 एविएशन पार्कवे में आयोजित द्वितीय ढींगरा फ़ाउण्डेशन यू.एस.ए. हिंदी चेतना सम्मान समारोह में श्रीमती उषा प्रियंवदा, श्रीमती चित्रा मुद्‌गल और पद्मश्री डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को 'ढींगरा फ़ाउण्डेशन हिंदी चेतना अंतरराष्ट्रीय सम्मान' प्रदान किया गया। समारोह में समग्र साहित्यिक अवदान हेतु श्रीमती उषा प्रियंवदा को कहानी संग्रह 'पेंटिंग अकेली है' हेतु, श्रीमती चित्रा मुद्‌गल को उपन्यास 'हम न मरब' हेतु तथा डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को सम्मानित किया गया। तीनों रचनाकारों को ढींगरा फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष ओम ढींगरा, हिंदी प्रचारिणी सभा कनाडा के संरक्षक श्याम त्रिपाठी, मोरिस्विल्ल शहर के मेयर मार्क स्टोलमेन, काउंसलर विक्की जानसन, काउंसलर स्टीफ़ राव, सुकेश साहनी, हिंदी चेतना की संपादक सुधा ओम ढींगरा ने यह सम्मान प्रदान किए। सम्मानित रचनाकारों को नॉर्थ कैरोलाइना के गवर्नर पैट मेकरोरी, मेयर मार्क स्टोलमेन तथा मेम्बर ऑफ़ कांग्रेस जार्ज होल्डिंग की ओर से भी विशेष रूप से प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। साहित्यकार पंकज सुबीर को मोरिस्विल्ल शहर की ओर से मेयर मार्क स्टोलमेन ने हिंदी सेवा के लिए सम्मान पत्र प्रदान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अमेरिका व भारत के राष्ट्रगान से हुआ तथा कुबी बाबू द्वारा कुचिपुड़ी नृत्य प्रस्तुत किया गया। अवसर पर अपने उद्‌बोधन में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने कहा कि प्रवासी भारतीय विदेशों में रहकर जो हिंदी की सेवा कर रहे हैं, वह प्रशंसनीय है। चित्रा मुद्‌गल ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी को लेकर जो उत्साह यहाँ नज़र आ रहा है वह सुखद है। उषा प्रियंवदा ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी ने भारत की सीमा के बाहर आकर जो स्थान बनाया है उसका ही प्रमाण है यह कार्यक्रम। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भारतीय हिंदी प्रेमी श्रोतागण उपस्थित थे। प्रमोद शास्त्री द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्री पंकज सुबीर की रिपोर्ट

नॉर्वे में सुरेशचन्द्र शुक्ल को संस्कृति पुरस्कार

नॉर्वे में गत 35 सालों से हिंदी और भारतीय संस्कृति की सेवा कर रहे भारतीय मूल के लेखक श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल को 1 अगस्त, 2015 को ओसलो नॉर्वे में बियरके-ओस्लो कल्चर पुरस्कार 2015 से सम्मानित किया गया।

सुरेशचन्द्र शुक्ल विदेश में सक्रिय प्रवासी भारतीय हिंदी लेखकों में विशेष रूप से नॉर्वे में अपने कार्यों के लिए पहचाने जाते हैं। उन्होंने अनेक साहित्यिक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है व अपने अनेक प्रकाशनों, अनुवाद तथा संपादन कार्य से वे हिंदी और नॉर्वेजियायी भाषा के बीच संबंध को दृढ़ बनाने और नॉर्वे में भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

श्रद्धांजलि

साहित्यकार बालशौरि रेड्डी

15 सितंबर, 2015 को तेलुगु और हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, 'चंदामामा' के पूर्व संपादक और बाल साहित्यकार डॉ. बालशौरि रेड्डी का 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 1 जुलाई, 1928 को आंध्र प्रदेश के कडपा ज़िला गोल्लल गूडूर में हुआ था। आपकी मातृभाषा तेलुगु थी लेकिन आपका जीवन हिंदी लेखन के प्रति समर्पित रहा। 1946 में हिंदी प्रचारिणी सभा की रजत जयंती के मौके पर आपकी मुलाकात गांधी जी से हुई। गांधी जी के राष्ट्रीय आन्दोलन के 14 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रमों में हरिजन उद्धार, नारी शिक्षा, कुटीर उद्योग के साथ हिंदी सीखना भी शामिल था। गांधी जी के कहने पर बालशौरि रेड्डी ने हिंदी सीखना शुरू किया। आगे चलकर उन्होंने विशारद, साहित्यरत्न और साहित्यालंकार की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। हिंदी सीखने के लिए काशी और प्रयाग गए जहाँ उनका परिचय निराला, महादेवी वर्मा, बच्चन जैसे बड़े साहित्यकारों से हुआ। तेलुगु के साथ-साथ हिंदी में भी आपने अनेक मौलिक रचनाओं का सृजन किया। बाल साहित्य, उपन्यास, कहानी, अनुवाद, आदि के माध्यम से आपने दक्षिण भारत की संस्कृति को हिंदी पाठकों तक पहुँचाने का काम किया। आपने 14 उपन्यास, लगभग दर्जनभर नाटक, कहानी, संस्मरण, संस्कृति और साहित्य से संबंधित कई पुस्तकें लिखी हैं। मौलिक लेखन के अतिरिक्त आपने तेलुगु की अनेक रचनाओं का हिंदी में और हिंदी की रचनाओं का तेलुगु में अनुवाद किया है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में बालशौरि रेड्डी का योगदान उल्लेखनीय है। आपने इस धारणा को खंडित किया कि हिंदी के विकास में क्षेत्रीय भाषाएँ बाधक बनती हैं तथा कहा कि सभी क्षेत्रीय भाषाएँ पुष्प हैं जो राष्ट्र रूपी हार की शोभा बढ़ाते हैं और हिंदी के विकास के पड़ाव में अंतर्धारा के रूप में मातृभाषा कार्य कर सकती है।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से श्री बालशौरि रेड्डी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्री आस्थानन्द सदासिंह

10 जून, 2015 को मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी रंगकर्मी और साहित्यकार श्री आस्थानन्द सदासिंह का 64 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आपका जन्म 27 नवंबर, 1950 को त्रिओले गाँव में हुआ था। आप 1972 से 1975 तक प्रकाशित साहित्यिक हिंदी पत्रिका 'आभा' के सहयोगी संपादक थे। कुछ समय बाद आपने प्रोफ़ेशनल ड्रामाटिक आर्ट्स संस्था की स्थापना की और इसी के तत्वावधान में अपने नाटक और 13 एपिसोड का टी.वी. धारावाहिक 'फटा जूता' प्रस्तुत किया। आपकी विशेष रुचि नाटक निर्देशन और अभिनय में थी। आपने एक उपन्यास 'माँसभक्षी' (1986), तीन नाटक 'तू-तू', 'आवाज़' और 'थूक दिया भविष्य' का प्रकाशन किया। आप कहानी लेखन और चित्रकारी में भी रुचि रखते थे।

1977 में आपके नाटक 'आवाज़' का मंचन पोर्ट लुई नगरपालिका के रंगमंच पर हुआ। 'उधार का पति' का सफ़ल मंचन 1987 में हुआ। 1986 में आपने डॉक्टर सुशील कुमार सिंह के नाटक 'सिंहासन खाली है' का मंचन हिंदी नाटक समारोह में किया जिसके लिए आपको सर्वश्रेष्ठ नाटक-निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार प्राप्त हुए। आपने भोजपुरी भाषा में 'खा ल नाती पेये करी' नाटक भी लिखा जिसकी प्रस्तुति टी.वी. पर भी हुई। आपने अनेक एकांकी नाटकों की रचना की और उनमें अभिनय भी किया। आपके नाटकों में समाज में व्याप्त भाई-भतीजावाद, चमचागिरी और भ्रष्टाचार जैसे विषयों के विरुद्ध आवाज़ उठाई गई है।

आपके अचानक मंच से प्रस्थान करने से मॉरीशस के रंग जगत को बहुत क्षति पहुँची है। मॉरीशस तथा विश्व के हिंदी पाठकों की ओर से आपको हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्री महेश रामजियावन की रिपोर्ट

साहित्य अकादमी में जी. सी. लगन स्मृति रचना-पाठ

20 अगस्त, 2015 को साहित्य अकादमी सभागार में उद्भव साहित्यिक संस्था द्वारा शिक्षाविद् जी.सी. लगन स्मृति रचना-पाठ का आयोजन किया गया। अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल उपस्थित थीं तथा अध्यक्षता वरिष्ठ कवि गंगा प्रसाद विमल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में शिक्षाविद् तथा लेखक बी. बी. गुप्ता तथा अशोक कुमार पांडेय उपस्थित थे। अवसर पर रचना-पाठ करनेवालों में कथाकार डॉ. हरिसुमन तथा श्रद्धा पांडेय थे जिन्होंने अपनी हृदयस्पर्शी कहानियों से उपस्थित श्रोताओं का मन जीत लिया। श्रीमती चित्रा मुद्गल ने स्व. श्री लगन की स्मृति में कहा कि उन्हें याद करने की परम्परा एक अच्छी पहल है। श्री विमल ने लगन जी को याद किया तथा युवा और वरिष्ठ लेखकों को एक ही मंच पर स्थान देने के लिए उद्भव संस्था की पहल को सार्थक बताया। डॉ. विवेक गौतम ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए शिक्षाविद् स्व. जी. सी. लगन के जीवन, आदर्शों, मूल्यों तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला। अंत में सी.पी. वर्मा ने सभी वक्ताओं और गणमान्य श्रोताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

आभार : श्री विवेक गौतम

प्रधान संपादक

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

सहायक संपादक

सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी

संपादन सहयोग

श्रीमती विजया सरजु, सुश्री चित्रलेखा रामदोयाल, श्रीमती उषा राम, सुश्री त्रिशिला सोमर, सुश्री दीया लक्ष्मी बंधन

***

विश्व हिंदी सचिवालय

स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस

World Hindi Secretariat

Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius

फ़ोन/Phone: (230) 676 1196 * फ़ैक्स/Fax: (230) 676 1224

इमेल/Email: info@vishwahindi.com

वेबसाइट/Website: www.vishwahindi.com

***

Printed by

BAHADOOR PRINTING LTD.

Avenue St. Vincent de Paul-Pailles

Tel: (230) 2081317

विश्व हिंदी सम्मान

सम्मानित भारतीय विद्वान

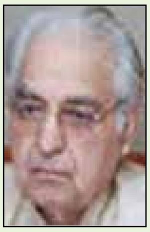

डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय

आप एक प्रतिष्ठित आलोचक, नाटककार, निबंधकार व संपादक हैं। आप देश की शीर्ष साहित्य और भाषा संस्थाओं के निदेशक तथा भारतीय ज्ञानपीठ की पत्रिका 'नया ज्ञानोदय' के मुख्य संपादक हैं।

डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य

आप उज्जैन विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर रह चुके हैं और रंगकर्मी एवं नाट्य निदेशन में ख्याति प्राप्त की। उज्जैन में आपने मध्य प्रदेश नाट्य ग्रुप कला अकादमी की स्थापना की व संस्कृत वाङ्मय के 18 नाटकों की हिंदी में पुनर्रचना की।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर

आप मलयालम, हिंदी व संस्कृत के ज्ञाता हैं। हिंदी प्रचारक के रूप में आपने दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार-प्रसार किया। आपने भारत सरकार के विभिन्न हिंदी सलाहकार समितियों के सदस्य के रूप में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया तथा हिंदी अध्यापन से भी जुड़े रहे।

डॉ. मधु धवन

आपने दक्षिण भारत में हिंदी पाठ्यक्रम निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया व अनेक पत्रिकाओं द्वारा हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया। तमिलनाडु के स्कूल व कॉलेजों में कैरियर ऑरीएन्टड पाठ्यक्रम बनाया तथा निदेशन किया। नाटकों के माध्यम से आपने दक्षिण भारत में बोलचाल की हिंदी को बढ़ावा दिया।

प्रो. माधुरी जगदीश छेड़ा

आप साहित्यकार, हिंदी सेवी और भाषाविद हैं। आप मुंबई विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर थीं। आपने गुजराती, मराठी व हिंदी के बीच समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपने विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी पाठ्यक्रम के लिए पुस्तकें संपादित कीं तथा हिंदी भाषा प्रशिक्षण के अनेक शिविर आयोजित किए।

प्रो. अनन्तराम त्रिपाठी

मुंबई विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने के बाद आप कई दशकों से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा से जुड़े हैं। 1951 से आपने विभिन्न हिंदी संस्थाओं को प्रोत्साहित किया। आपने 6ठे, 7वें, 8वें तथा 9वें विश्व हिंदी सम्मेलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप 'राष्ट्रभाषा' पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य और लगभग 25 पुस्तकों के संपादक रहे।

कुमारी अहेम कामै

1980 से आप स्वैच्छिक रूप से नागा हिंदी विद्यापीठ में छात्रों को हिंदी पढ़ाती रहीं। आपने कठिन परिश्रम से और निजी पहल कर्मियों के सहयोग से मणिपुर में हिंदी की प्रगति व प्रचार-प्रसार में योगदान दिया तथा पूर्वोत्तर प्रांतों में हिंदी के प्रसार में सफ़लता पाई।

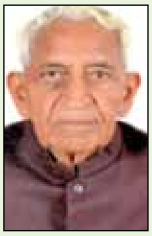

डॉ. परमानंद पांचाल

आप दक्खिनी हिंदी साहित्य के विद्वान, लिपि विशेषज्ञ और साहित्यकार हैं। 'नागरी' पत्रिका के संपादक के रूप में देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रहकर हिंदी की सेवा की।

डॉ. नागेश्वर सुन्दरम्

आपको हिंदी, तमिल और कन्नड़ में महारथ हासिल है। आपकी रचनाएँ विविध विषयों को समाहित करती हैं। आप दक्षिण हिंदी प्रचार सभा मद्रास से जुड़े रहे हैं। दक्षिण में हिंदी को स्वीकार्य बनाने में आपने योगदान दिया।

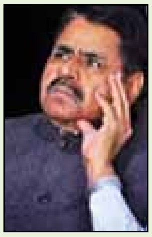

प्रो. हरि राम मीणा

आप स्वतंत्र हिंदी लेखन में सक्रिय हैं तथा आपकी पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। आपके साहित्य पर देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में दर्जनों शोधार्थी एमफ़िल तथा पीएचडी कर रहे हैं। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति आपकी गहरी निष्ठा है।

डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी

आप कवि, कहानीकार, निबंधकार, आलोचक और संपादक के रूप में हिंदी भाषा व साहित्य के प्रचार-प्रसार में प्रयत्नशील रहे हैं। आपने हिंदी में 'अंडमान और निकोबार की लोक कथाएँ' पुस्तक लिखकर आदिवासी लोक कथाओं में निहित मान्यताओं, परंपराओं, मिथकों आदि को सफ़लतापूर्वक राष्ट्रीय फ़लक तक पहुँचाया। आप साहित्य अकादमी से जुड़े रहे हैं।

डॉ. सुरेश कुमार गौतम

आप साहित्यकार, कोशकार, विद्वान, समीक्षक, संपादक, मीमांसक तथा चिंतक रहे हैं। पिछले चार दशकों से आप हिंदी के प्रसार और उन्नयन में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। आपने राष्ट्रीय सांस्कृतिक दृष्टि और मानवीय मूल्य चिंतन को एक निश्चित मंच प्रदान किया। आपने भारत की संपूर्ण भाषाओं और बोलियों के साहित्य को एकत्रित करने का सफ़ल प्रयास किया।

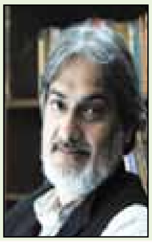

श्री आदित्य चौधरी

आप दूरदर्शन और अन्य टी.वी. चैनलों के प्रसिद्ध कार्यक्रमों और धारावाहिकों के लेखक और रचनात्मक सलाहकार रहे हैं। आपने 'भारत कोश' का ऑनलाइन प्रकाशन किया जो युनिकोड में है तथा जिसे प्रतिमाह दस लाख लोग देखते हैं। आपने छात्रों को नि:शुल्क कंप्यूटर ज्ञान और हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिया।

डॉ. के.के. अग्रवाल

आप सुप्रसिद्ध पुस्तक 'Alloveda' के लेखक और चिकित्सक हैं। आपने भारतीय संस्कृति एवं परंपरागत जीवन मूल्यों को आधुनिक चिकित्सा से जोड़कर हिंदी समाचार पत्रों में लेखन द्वारा लोगों में स्वास्थ्य और हृदय रोग के प्रति जागरूकता पैदा की। आपने सामाजिक अभियानों व हिंदी के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किए हैं।

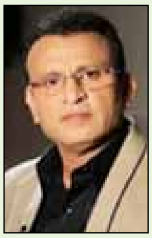

श्री अन्नू कपूर

आपने हिंदी शब्दों के जादू से बॉलिवुड में हिंदी को नई पहचान दिलाई। टी.वी. कार्यक्रमों द्वारा आपने हिंदी का प्रचार-प्रसार करते हुए लोगों का स्नेह बढ़ाया। हिंदी को जन मानस के पटल पर अंकित करने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री अरविंद कुमार

आप समान्तर कोश हिंदी थिसॉरस के जनक हैं और अपनी पत्नी कुसुम के साथ पिछले 39 वर्षों से हिंदी-अंग्रेज़ी अभिव्यक्तियों के संसार में सबसे बड़े डेटाबेस अरविंद लेक्सिकन का संकलन करते आए। फ़िल्मी पत्रिका 'माधुरी'के संपादक के रूप में आपने स्वस्थ फ़िल्मी पत्रकारिता को नया आयाम दिया।

श्री माता प्रसाद

आप अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल भी रहे हैं और अपने कार्यकाल में आपने प्रदेश के विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग खोलने में योगदान दिया एवं पूर्वोत्तर परिषद के बैठकों में हिंदी को बढ़ावा दिया। आप त्रिनिदाद एवं टोबैगो में आयोजित 5वें विश्व हिंदी सम्मेलन में सरकारी प्रतिनिधि मंडल के नेता थे। पूर्वोत्तर में हिंदी को स्थापित और सुदृढ़ करने में आपका प्रयास सराहनीय है।

श्री आनंद मिश्र 'अभय'

आप विद्यार्थी जीवन से ही शुद्ध एवं प्रांजल हिंदी के पक्षधर रहे हैं तथा प्रशासनिक पदों पर रहकर हिंदी व्याकरण पर कार्य किया। मुकदमों के निर्णयों में भी आपने वर्तनी पर ध्यान दिया। आपने 'राष्ट्र धर्म' पत्रिका का 18 वर्षों तक संपादन किया। आप हिंदी के प्रति गहरी निष्ठा तथा रुचि रखते हैं।

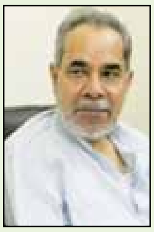

श्री रामबहादुर राय

आप हिंदी पत्रकार व 'यथावत' पत्रिका के संपादक हैं। दिल्ली में प्रकाशित हिंदी पाक्षिक 'प्रथम प्रवक्ता' व 'जनसत्ता' समाचार पत्र के संपादक तथा 'नवभारत टाइम्स' के संवाददाता रहे। गणतंत्र दिवस 2015 के अवसर पर आपको पद्मश्री से नवाज़ा गया। आप देश की अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। आपकी सामाजिक सेवाओं और पत्रकारीय योगदान के लिए आपको कई सम्मान दिए गए।

श्री रामदरश मिश्र

आप उपन्यासकार, कहानीकार तथा कवि हैं। आपने कई शैलियों में सर्जनात्मक प्रतिभा से प्रभावशाली अभिव्यक्ति और ग़ज़ल में अपनी सार्थक उपस्थिति रेखांकित की। आप अनेक साहित्यिक, अकादमिक और सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष रहे व आपकी अनेक कृतियाँ पुरस्कृत हुईं। सभी साहित्यिक विधाओं में आपका योगदान बहुमूल्य है और आप कई पत्रिकाओं के सलाहकार संपादक हैं।

सम्मानित भारतेतर विद्वान

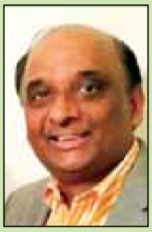

श्री अनूप कुमार भार्गव (अमेरीका)

आप न्यू जर्सी राज्य में स्वतंत्र कंप्यूटर सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। आप इंजीनियरिंग स्नातक हैं और कवि भी। आप इ-कविता नामक ऑनलाइन मंच के संस्थापक हैं तथा विशाल वेबसाइट कविता कोश में भी आपका योगदान उल्लेखनीय है। हिंदी अंतरराष्ट्रीय समिति के माध्यम से हिंदी संबंधी गतिविधियों में आप सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं तथा आप अनेक कवि सम्मेलानों के आयोजनों से भी जुड़े रहे हैं।

श्रीमती स्नेह ठाकुर (कनाडा)

आप 'वसुधा' पत्रिका का संपादन करती हैं। आपने कनाडा में रहकर सक्रिय रूप से हिंदी साहित्य की कई विधाओं में लेखन कार्य किया है। हिंदी-उर्दू में आपकी अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। आप द्विभाषिक और अनुवादक भी हैं। आपको हिंदी सेवा के लिए कई सम्मान प्राप्त हैं। कनाडा में हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपका योगदान उल्लेखनीय है।

प्रो. हाइंस वेर्नल वेसलर (जर्मनी)

आप उपसला विश्वविद्यालय, स्वीडन में प्राध्यापक हैं तथा जर्मनी के बॉन विश्वविद्यालय में अतिथि प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। आपने 'विष्णु पुराण में समय तथा इतिहास' पर महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। आपने जर्मनी में हिंदी के विभिन्न क्षेत्रों विशेषकर भाषा संवर्धन व हिंदी प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ. अकीरा ताकाहाशी (जापान)

आप भाषा तथा संस्कृति स्नातक स्कूल, ओसाका, जापान में प्रोफ़ेसर के रूप में कार्यरत हैं। आपने 'हिंदी तथा साहित्य में नैतिकता की समस्या' पर शोध किया है। आपने पिछले साढ़े तीन दशकों में अध्येता, अनुवादक, शोधार्थी तथा प्राध्यापक के रूप में हिंदी की सेवा की है। हिंदी के प्रति आपकी गहरी निष्ठा है और जापान में हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपके प्रयास सराहनीय हैं।

प्रो. उषा देवी शुक्ला (दक्षिण अफ़्रीका)

आप दक्षिण अफ़्रीका स्थित हिंदी शिक्षा संघ की अध्यक्षा व शैक्षणिक समिति की संयोजिका हैं। दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में आपका विशेष योगदान है। आपने अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है।

सुश्री कमला रामलखन (त्रिनिदाद एवं टोबैगो)

आप शिक्षिका हैं तथा हिंदी-सेवा के लिए आपको कई सम्मान प्राप्त हैं। आप 38 वर्षों से हिंदी तथा भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य कर रही हैं। आपकी हिंदी पुस्तकें त्रिनिदाद और टोबैगो में हिंदी सीखनेवालों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हैं। आप तीसरे, पाँचवें तथा छठे हिंदी सम्मेलनों में देश का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। त्रिनिदाद और टोबैगो में हिंदी को लोकप्रिय बनाने में आपका सार्थक प्रयास रहा है।

डॉ. दैमन्तास वलनचूनास (लिथुआनिया)

आप लिथुआनिया में हिंदी शिक्षक हैं। आपने अपने अध्यापन कार्य के माध्यम से हिंदी भाषा और संस्कृति को प्रचारित करने में अहम भूमिका निभाई है तथा रेडियो कार्यक्रम, वेबसाइट साक्षात्कार तथा सेमिनारों के माध्यम से हिंदी को पुष्पित तथा पल्लवित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

श्रीमती नीलम कुमारी (फिजी)

आप 'शांतिदूत' पत्रिका की संपादक हैं। फिजी में आपने अपने अध्यापन कार्य के माध्यम से हिंदी के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने रिपोर्ट लेखन तथा सामाजिक कार्यों में भी अपना योगदान दिया है। भारत-फिजी छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत भारत में अध्ययन करने के बाद आप फिजी में हिंदी की सेवा कर रही हैं।

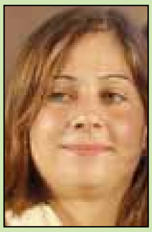

डॉ. सार्ज वर्बेक (बेल्जियम)

आप बेल्जियम में भाषा तथा संस्कृति विभाग, खेंट विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं। आपने भारतीय-आर्य भाषाओं के क्षेत्र में व्यापक कार्य किया है। आपने अनेक पुस्तकों का संपादन किया है तथा हिंदी और कश्मीरी भाषा पर गहन शोध कार्य भी किया है।

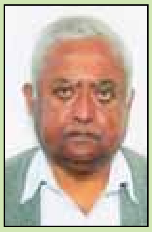

श्री अजामिल माताबदल (मॉरीशस)

आप पिछले चार दशकों से मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े हैं। आप मॉरीशस के शिक्षा मंत्रालय, विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी संगठन और अन्य संस्थाओं से जुड़े हैं तथा अनेक पत्रिकाओं में सह-संपादक और प्रबंध संपादक के रूप में कार्य किया है। हिंदी के प्रति आपकी गहरी निष्ठा है। मॉरीशस में सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में आपका महत्वपूर्ण योगदान है।

श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल (मॉरीशस)

आप मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव हैं। आप महात्मा गांधी संस्थान में वरिष्ठ प्राध्यापक रह चुके हैं। शिक्षण, सृजनात्मक लेखन, तकनीक तथा नवीन प्रचार अभियानों आदि के माध्याम से आपने मॉरीशस में हिंदी के उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने अनेक साहित्यिक एवं शैक्षणिक प्रकाशनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ. इंदिरा गाज़िएवा (रूस)

आप रूसी राजकीय मानवीकि विश्वविद्यालय की हिंदी अध्यापिका हैं। आपने दाग़िस्तान और मास्को में हिंदी अध्ययन तथा हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। आप एसोसिएशन ऑफ़ साउथ एशियन स्टडीज़ और यूरोपियन एसोसिएशन ऑफ़ साउथ एशियन स्टडीज़ की सदस्या हैं।

सुश्री दसनायक मुदियंसेलागे इन्द्रा कुमारी दसनायक (श्रीलंका)

आप हिंदी की सर्टिफ़िकेट पाठ्यक्रम की प्रशिक्षिका हैं। आपने हिंदी-सिंहली-अंग्रेज़ी दृश्य शब्दकोश का प्रकाशन किया है। श्री लंका में हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपकी प्रमुख भूमिका रही तथा कोलंबो सांस्कृतिक केंद्र में छात्रों को हिंदी भाषा प्रमाण पत्र का पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं।

श्री मोहम्मद इस्माईल (सउदी अरब)

आप सउदी अरब में वरिष्ठ हिंदी अध्यापक हैं। आपने अनेक हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन कर सउदी अरब में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का अभूतपूर्व कार्य किया है। सउदी अरब में हिंदी के प्रचार-प्रसार में में आपका महत्वपूर्ण योगदान है।

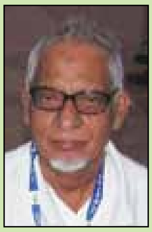

श्री सुरजन परोही (सूरीनाम)

आप हिंदी के स्थापित कवि हैं। आपकी रचनाओं में राष्ट्रवादिता, धर्म, संस्कृति एवं समाज सुधार के गुण हैं। आप 'चंद्रमा' कार्यक्रम का भी प्रसारण करते हैं। आपको सूरीनाम में हिंदी प्रचार के लिए राष्ट्रपति सम्मान के साथ अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

श्री कैलाश नाथ बुधवार (यू.के)

आप बी.बी.सी. विश्व हिंदी सेवा, लंदन के संपादक, निर्माता तथा प्रसारक हैं। साथ-साथ आप अनेक हिंदी संस्थाओं से जुड़े हैं। आपने 150 से अधिक रेडियो कार्यक्रमों का लेखन और प्रसारण किया है। आप लंदन की संस्था तथा यू.के. से भी जुड़े रहे हैं। आप पत्रकारिता से संबंधित अनेक पुस्तकों के रचयिता हैं।

डॉ. श्रीमती उषा राजे सक्सेना (यू.के)

आप ग्रेट ब्रिटेन लेखक संघ की संस्थापिका हैं। हिंदी में आपकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आप लंदन में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से भी जुड़ी रही हैं। आपकी रचनाएँ यू.जी.सी. द्वारा अनुशंसित पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। ब्रिटेन में हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा संवर्धन में आपका महत्वपूर्ण योगदान है।

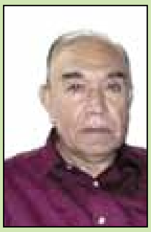

श्री हाशिम दुर्रानी (ऑस्ट्रेलिया)

आप स्कूल ऑफ़ केमिस्ट्री में व्यावसायिक अधिकारी हैं। आप हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, पश्तो भाषाओं के विद्वान हैं। आप 12 वर्षों से सिडनी विश्वविद्यालय में वरिष्ठ अकादमिक के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ. इमरे बांगा (हंगरी)

आप ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के प्राच्य अध्ययन संकाय में सहायक प्राध्यापक हैं। हिंदी विशेषकर खड़ी बोली, हस्तलेख, रीति कविता, ब्रज भाषा में रीतिमुक्त कविता आदि आपके शोध-क्षेत्र हैं। आपने हिंदी, उर्दू तथा बंगाली में भी प्रशिक्षण दिए हैं।

डॉ. पी. जयरामन (अमेरिका)

आप भारतीय विद्या भवन के कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। आप संस्कृत, हिंदी, तमिल भाषा एवं साहित्य के विद्वान हैं। भारतीय संस्कृति तथा साहित्य के प्रति समर्पित होकर आपने इन विषयों पर गंभीर अध्ययन किया है। आपने भारतीय विद्या भवन के आदर्शों से प्रभावित होकर वर्ष 1980 में न्यू यॉर्क में भारतीय विद्या भवन की स्थापना की तथा भारतीय संस्कृति, परम्परा, दर्शन, भाषा, साहित्य एवं कलाओं का प्रचार-प्रसार किया। आपने अनेक धार्मिक पुस्तकों का हिंदी व अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है। आपको अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हैं।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा विश्व हिंदी समुदाय की ओर से 'विश्व हिंदी सम्मान' प्राप्त करनेवाले विद्वानों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।